

रोमियों की पत्री 3

Hindi Bible Class - Pr.Valson Samuel

रोमियों अध्याय 5, पद 20 और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ। जिन लोगों को प्रेरित की सलाह जैसी होनी चाहिए, नहीं मिलती, उनके लिए यह हानिकारक हो जाता है। उस दौर और इस दौर में भी ऐसा ही था। 2 पतरस 3 अध्याय 15 से 16 और हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो, जैसे हमारे प्रिय भाई पौलुस न भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाई खींच तान कर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं। जैसा कि हम प्रेरितों के पत्र में पढ़ते हैं, जब हम चर्च में कुछ जगहों पर गलत काम देखते हैं, तो वह इसका खंडन करता है, और जिन्हें इसका विचार नहीं मिलता है, जैसा कि हमने यहां पढ़ा है, वे इसे अपने विनाश के लिए खारिज कर देते हैं। यह उतना आसान नहीं है। इसलिए ऐसे क्षेत्र हैं जहां प्रेरितों की पत्रियों के रहस्यों को समझना मुश्किल है। हमें आत्मा में यह ग्रहण करने की आवश्यकता है कि प्रेरित का इससे क्या तात्पर्य था। तो यहाँ पद्य से एक अंश है। **और व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ।** तो उस समय में विवाद का कारण यह है कि जब पाप बहुत होता है, अनुग्रह बहुत होता है, और हम पाप करते हैं। प्रत्युत्तर में, प्रेरित हमें छठे अध्याय के पहले भाग में ये पद देता है। जब हम रोमियों के छठे अध्याय के एक और दो पद पढ़ते हैं **सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं ?** फिर इस अध्याय में 5 स्थानों पर प्रश्नवाचक चिन्ह हैं यानी अज्ञान ही कारण है कि चर्च कुछ मुद्दों के आधार पर भटक जाता है। ये लोग ज्ञान के अभाव में मर जाते हैं। तब हम इस शब्द का अध्ययन करते हैं ताकि हम उस ज्ञान तक पहुंच सकें। तभी हम गलत सलाह के आने पर उसे पहचानने और समझने में सक्षम होंगे। हम खुद को इसमें फंसने से भी बचा सकते हैं। तब परमेश्वर का वचन हमें पाप करते रहना नहीं सिखाता कि अनुग्रह बहुत हो। अनुग्रह को आप पर बुराई करने का कारण न बनने दें। जैसा कि हम यहूदा की पत्री में पढ़ते हैं, उस

समय लोगों का एक ऐसा समूह था। वहाँ किसी भी समय है। यहूदा का पत्र इसका चौथा पद है। **क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिन के इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहिले ही से लिखा गया था: ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे अद्वैत स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं॥** तो हम यहाँ पढ़ते हैं कि यदि हम परमेश्वर के अनुग्रह का उपयोग वासना करने के लिए करते हैं, तो हम यीशु मसीह, हमारे एकमात्र प्रभु और प्रभु का इन्कार कर रहे हैं। वे यीशु के नाम से प्रार्थना करते थे और गीत गाते थे परन्तु यदि तब परमेश्वर के अनुग्रह को व्यभिचार के काम पर अधिकार दिया जाए, यह बहुत खतरनाक है अगर हम ऐसा जीवन जीते हैं जो उस पाप से मुक्त नहीं है, हमेशा यह कहते हुए कि पाप करने के बाद अनुग्रह हमें ढक लेगा। **क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझ कर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।** यह इतना गंभीर मामला है। तब प्रेरित हमें वहाँ निश्चित रूप से और स्पष्ट रूप से सूचित करता है। क्या आप पाप करते रहते हैं? कभी नहीं। हम, जो पाप में मरे हुए हैं, अब उसमें कैसे जी सकते हैं? तब हम पढ़ते हैं कि विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने के द्वारा प्रभु ने हमारे पिछले पापों को क्षमा कर दिया। क्षमा या नहीं Forgiveness of sins हम, जो पाप में मरे हुए हैं, अब उसमें कैसे जी सकते हैं? जीवन जैसी कोई चीज होती है, अर्थात् पाप से मरने की अवस्था। यह मार्ग हमें बताता है कि उस मरणासन्न अवस्था में हम पाप में नहीं जी सकते। मैंने बहुतों की गवाही सुनी है। उनकी पत्नियों ने स्वयं गवाही दी है। पति बहुत गुस्से में था। लेकिन जब वह विश्वास में आया और इस तरह जीने लगा, तो वह क्रोध पूरी तरह से बदल गया। एक बहन ने कहा कि वह अब मेरे पति के रूप में इस तरह के सज्जन व्यक्ति को पृथ्वी पर कभी नहीं देख पाएगी। तब वह हमें अपने गुस्से के बारे में बताएगा। यह गुस्सा आने पर वह हमें अपने हाव-भाव दिखाएंगे। लेकिन जब हमने उसे देखा तो वह बहुत शांत आदमी था। यह देखकर कि चलना बहुत ही शांति से चल रहा था। उस क्षेत्र में पाप से मर गया। इस प्रकार हमारे जीवन में एक ऐसी अवस्था आती है जिसमें पाप की कोई भी अवस्था मर रही होती है। यह हमें वचन सिखाता है। जब यह मर जाता है, तो यह हम में नहीं रह सकता। **कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं ?** इसलिए जब हम इस पद के बारे में सोचते हैं, विशेष रूप से प्रेरित पौलुस के शब्दों के अंश, तो जिस बात पर जोर दिया जाता है वह यह है कि यह विश्वास का

एक तरीका है। इसलिए विश्वास से धर्मी ठहराना, विश्वास से जीवन, ऐसी कोई चीज नहीं है जिसके लिए हम स्वयं प्रयास नहीं कर सकते हैं। इसलिए यह सच्चाई हमारे सामने प्रकट हुई है। इसी के द्वारा हम पर यीशु मसीह के आत्मा के द्वारा जीने का जीवन प्रगट होता है। तब हमें उस वास्तविकता में विश्वास करके आना चाहिए। याद रखें, जो वचन में है वह मृत विश्वास नहीं है, बल्कि भीतर का जीवन है। क्योंकि विश्वास हम में मसीह के वचन के द्वारा आता है। रोमियों 10: 17 **सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।** तब उस विश्वास में जीवन होता है और वह जीवन हमें इस तक ले जाता है तो हमें विश्वास करना होगा। क्योंकि इसे हमारे सामने एक सच्चाई के रूप में प्रकट करने की आवश्यकता है **क्योंकि हमें उन्हीं की नाई सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुनने वालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।** हम इब्रानियों के चौथे अध्याय के दूसरे पद में पढ़ते हैं ऐसा ही इब्रानियों के बारहवें अध्याय के दूसरे पद में देखा जाता है **विश्वास के अगुवे और समाप्त करने वाले यीशु को देखें।** यह सब विश्वास जीवन के बारे में है। गलातियों अध्याय 2 पद 20 में कहता है **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।** तो चलिए पूछते हैं, आप कैसे रहते हैं? प्रेरित उस प्रश्न का उत्तर देता है। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपना प्राण दे दिया। तब उस विश्वास की वास्तविकता हममें होनी चाहिए। हर पद और हर अध्याय जिसके बारे में हम अभी सोचते हैं वह विश्वास के द्वारा है। उस विश्वास का आधार परमेश्वर का वचन है। रोमियों अध्याय 10, पद 17 हमें बताता है **सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।** जब हम उस श्रवण को कहते हैं, तो हमें उसे परमेश्वर के मुख से सुनना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। हमने सलाहकारों द्वारा प्रचारित बहुत से उपदेश सुने हैं। लेकिन अगर हमारे जीवन में कोई बदलाव नहीं आता है तो हम जो स्रोत सुनते हैं वह सही नहीं है। इसलिए हमें वह वचन परमेश्वर के मुख से प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए जब भी हम परमेश्वर की उपस्थिति में होते हैं, जब हम वचन को पढ़ते हैं, तो हमें इसे परमेश्वर की वाणी के रूप में, परमेश्वर के सच्चे वचन के रूप में ग्रहण करना चाहिए। यह किसी भी सहयोगी के लिए, किसी भी कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए होना चाहिए। वह विश्वास हमारे भीतर प्रेरक शक्ति होना चाहिए। इसे पहला थिस्सलुनीकियों 2:13 में पढ़ा जाता है। **इसलिये हम भी परमेश्वर का**

धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा, तो तुम ने उस मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया: और वह तुम में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशाली है। तब यह सिर्फ एक विश्वास नहीं है। हमारे भीतर काम करने वाला विश्वास क्यों काम करता है? जब व्यापार की बात आती है, तो उसके भीतर एक क्रिया होती है। हम बल्बों से प्रकाश देखते हैं और उसके भीतर एक व्यावसायिक शक्ति है।

उसमें कहीं न कहीं प्रकाश का स्रोत है। उस स्रोत से बिजली बह रही है। इसे कहते हैं विद्युत का प्रवाह, वही हमें यह प्रकाश देता है। इस तरह हम में से एक प्रकाश के आने के लिए, परमेश्वर का वचन विश्वास के द्वारा हम में काम करना जारी रखना चाहिए। रोमियों के छठे अध्याय के तीसरे पद को पढ़ते समय **क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया** विश्वास में अब उस मौत का हिस्सा नहीं है। हमें यह ध्वनि तब प्राप्त हुई होगी जब हमने बपतिस्मा लिया था। मैंने यीशु मसीह की मृत्यु में भाग लेने के लिए बपतिस्मा लिया है। तब हम इस क्रूस के अनुभव को प्रेरित पौलुस के जीवन में भी देख सकते हैं। यीशु की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से मरकुस अध्याय 8, पद 34 में पाई जाती है। **उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।** तब उसे स्वयं को क्रूस का भागीदार होने से इंकार करना चाहिए। गलातियों को लिखे पत्र में, प्रेरित तीन तरीकों से क्रूस के अनुभव का वर्णन करता है। गलातियों के दूसरे अध्याय का पद 20 पढ़ें **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।** वह विश्वास एक मृत विश्वास नहीं है जैसा कि मुझे याद दिलाया गया था। मेरा मानना है कि। जब हम उस विश्वास को वचन के माध्यम से प्राप्त करते हैं, तो यह हमारे भीतर काम करना शुरू कर देता है। मुझे नहीं पता कि मैंने इसे अपने जीवन में अभी कितनी बार बनाया है। मैं इसे दिन में कई बार करने जा रहा हूं। क्योंकि शब्द कहाँ है? वह शब्द कहाँ है जो हमने पहले पढ़ा था? अगर शब्द हमारे मुंह और हमारे दिल में है, तो यह काफी नहीं है। इसी के बारे में हमें बात करनी चाहिए और घोषणा करनी चाहिए। शब्दों में एक आधिकारिक शब्द है, साथ ही बोला गया शब्द भी है, और वह शब्द भी है जो हमारे भीतर रहता है। आधिकारिक शब्द

हमारी किताब में है। अगर यह वहां है तो हमें इसका कोई फायदा नहीं है। हमारे दिल में जो शब्द है, जो शब्द बोलता है, वह कई आयामों का है। परमेश्वर का सेवक वचन बोलता है और हम उसे परमेश्वर की वाणी के रूप में सुनते हैं। परमेश्वर का आत्मा हमें हमारे भीतर का वचन बताता है। यह वह शब्द है जो बोलता है। हम इसे अंदर सुन सकते हैं। अंदर वह शब्द है जिसकी परमेश्वर हमें याद दिलाता है। अगर हम इसे बाहर न कहें तो भी यह हमारे भीतर गूंजता रहेगा। लेकिन जब हम उसे पुकारें, तो उसे अपने मुँह से न निकलने दें। क्योंकि जो यहोशू कहता है, वह यह है, कि जो व्यवस्था की पुस्तक में है, वह तेरे मुँह से न छूटे। तब यह समय-समय पर आत्म-बलिदान से हमारे मुँह में आना चाहिए। यह सिर्फ आप ही नहीं बुला रहे हैं, यह बहुत शक्तिशाली है जब यह आत्म-बलिदान द्वारा हमारी जीभ से आता है। क्योंकि हम यही सुनते हैं। परमेश्वर का आत्मा हमारे मुँह से बोलता है और हम इसे फिर से अपने कानों से सुनते हैं। इतना ही नहीं, बोले गए शब्द अक्सर हरकत में आते हैं। ईश्वर द्वारा प्रकाश होने दो, यह वह शब्द है जो बोलता है। फिर प्रकाश आया। इसलिए जब से मैंने यह कहा है, तुम कल से कुछ शब्द नहीं चिल्ला रहे हो, तुम्हें आत्म-बलिदान में पुकारना चाहिए। तभी उसकी सत्ता होगी। गलातियों अध्याय 5, इसका चौबीसवाँ पद। **और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है॥** जब हम मसीह के क्रूस के सहभागी बनने के लिए विश्वास में बपतिस्मा लेते हैं, तो उस विश्वास का कार्य हम में होना चाहिए। जब वह क्रिया होती है तो हमारे भीतर जो वचन प्राप्त हुआ है वह विश्वास बन जाता है। गलातियों अध्याय 6, पद चौदह **पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।** तब हमें पता चलता है कि यह शब्द तभी सच होता है जब हमारे अंदर दुनिया का प्यार कम हो जाता है। जब यह एक निश्चित स्तर तक बढ़ता है, तो सांसारिक प्रेम हमसे दूर हो जाता है। हम उस स्तर पर आ जाएंगे जहां हमें दुनिया और दुनिया की हर चीज से प्यार नहीं है। वही उच्चतम मानक है। तब हमें उस लक्ष्य को अपने सामने देखना चाहिए। शरीर की लालसा, आंखों की वासना, और जीवन का घमण्ड, हम इन सब से पूरी तरह छुटकारा पा लेंगे। जैसे, हम समझ सकते हैं कि राग की इच्छाएँ धीरे-धीरे उससे मुक्त हो जाती हैं। उसी तरह, हम समझ सकते हैं कि मसीह की आत्मा और सच्चाई की आत्मा हम में लगातार काम कर रही है। प्रार्थना में हमारी मदद करता है, वचन हमें प्रकाशन देता है, शब्द पढ़ना दिलचस्प है, आत्मा में प्रेरणा, तब हमें ये शब्द याद आते हैं, यह हमें कई मामलों

में निर्णय लेने की आवश्यकता के बारे में सलाह देता है। यह सलाह की भावना है जो हमें उस मार्ग को स्पष्ट करती है जिसे हमें लेने की आवश्यकता है। कुछ मामलों में, हमें वास्तविक समय में 'नहीं' कहा जाता है। तब आत्मा के द्वारा जिया गया जीवन हमारे जीवन में एक वास्तविकता बन जाएगा। इसलिए हम सब को जो बपतिस्मा ले चुके हैं, अवश्य ही मसीह में शामिल होने के लिए इस सभी विश्वास में शामिल हों। वह विश्वास हमारे जीवन में एक वास्तविकता बन जाएगा। अन्यथा, मेरा मानना है, धन्यवाद कहना संभव नहीं है। ऐसे पदों की रचना करना संभव नहीं है। हम इसे अपने जीवन में क्रिया में देखना शुरू करते हैं। पढ़ें रोमियों 6:4 **सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुआं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।** हमें उस पर विश्वास करना होगा। जब उसे दफनाया जाएगा, तो वह फिर ऊपर नहीं आएगा। वह पाप से मरा और उसे दफनाया गया। और इतना ही नहीं, हमें लंबे समय तक जीना चाहिए। यदि वह वहीं गाड़ा जाए, परन्तु नया न रहे, तो जो खोदा है वह ऊपर आ जाएगा। यह सब पहले से ही है। अब यह इस तरह गतिहीन पड़ा हुआ है। लेकिन अगर यह नया आदमी नहीं रहता है, तो वह अचानक अपना सिर उठाएगा। तब हमें जीवन के नवीनीकरण में चलना चाहिए। उस जीवन के नवीनीकरण में चलने के लिए आत्मा की आज्ञाकारिता का जीवन लगता है। आत्मा और जीवन। वचन जीवित प्राप्त हुआ है आत्मा हमें जीवन में ले जाती है। तब कॉल को अच्छा समझना चाहिए। हमें इसे समझना चाहिए और इसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हे प्रभु, मुझे यह जीवन दो। पुराने आदमी को दफनाया जाना चाहिए और नए आदमी को आत्मा से जीना चाहिए। फिर, जैसा कि हम रोमियों अध्याय 6, पद 6 में पढ़ते हैं, हमें एक बहुत शक्तिशाली शब्द मिलता है। **क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।** यहाँ हम जानते हैं शब्द देखते हैं। जानने के लिए कहना है कि यह हम में लिखा गया था एक होना एक होना है। जब हम इसे पढ़ते हैं, तो यह हमसे चिपक जाता है। जब हम कुछ चीजों के बारे में लगातार पढ़ते और सोचते हैं और हमेशा उसे सुनते हैं, तो हम उसमें हो जाते हैं। यानी शिक्षाएं हमारे भीतर होनी चाहिए। कई धार्मिक लोग और पार्टी के कुछ सदस्य एक समय में उन्हें साइबेरियन जेलों में कैद कर लेते थे और उनकी पार्टी की विचारधारा को लगातार रेडियो पर सुना जाता था। ये कैदी एक समूह थे जो इसके खिलाफ खड़े थे। लेकिन वे विचारों के साथ आते हैं, और उन्हें इसे बाहर निकालते हुए देखना वाकई मजेदार है। मानो कहें कि

जब वे लगातार सुनना और सोचना शुरू करेंगे तो उसमें मौजूद विचार उनके दिमाग में चिपक जाएंगे परमेश्वर का वचन सब से ऊपर है। जब हम लगातार परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं और उस पर मनन करते हैं और उसे अपने अंदर डालते हैं, तो वह वचन हमारे दिलों में बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है। हमारी सोच पूरी तरह बदल जाएगी। हम बदलने लगते हैं। यदि वचन हममें इस हद तक काम नहीं करता है तो हम या तो शब्द नहीं पढ़ रहे हैं या समारोह जीवन होगा यानी जीवन नहीं है। रोमियों 6:6 . पढ़ते समय **क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।** तब हमें इस उपाय पर आना चाहिए। पुराना मनुष्य को सूली पर चढ़ाया गया था और वह नहीं है। हमें उस स्तर पर आना चाहिए। इसलिए शिष्य नहीं गए। हम प्रभु के वचन में पढ़ते हैं कि जब सब कुछ चले गये , तो तुम भी जा सकते हो। यूहन्ना के सुसमाचार के छठे अध्याय के पद 66, 67 इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। तब यीशु ने उन बारहों से कहा, **क्या तुम भी चले जाना चाहते हो ?** अगर यह आज होता, तो हम सब अपने पैरों पर खड़े होते, "ओह, मत जाओ।" या ऐसा कोई शब्द दें? नहीं देंगे। वो चले जाएं तो अफ़सोस किसी का दिल ना दुखाना, न दुखाना, वो शब्द देना जो सबको पसंद हो, आज इतने ही भाषण हैं। यूहन्ना के सुसमाचार के छंद 68, 69, अध्याय छह **शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।** विश्वास ही नहीं बल्कि जानो। तो जानना एक बहुत ही महत्वपूर्ण, बहुत शक्तिशाली शब्द है। इसलिए जब हम इन छंदों को पढ़ते हैं, तो यह शब्द हमारे दिलों से चिपकना चाहिए। हमें वह शब्द होना चाहिए। हमें उस शब्द की प्रकृति में होना चाहिए। हमें वह बनना चाहिए जो वचन कहता है कि वह है। हम जानते हैं कि उसे उसके साथ सूली पर चढ़ाया गया था। इस प्रकार मृतक पाप से मुक्त हो जाते हैं। यह एक ऐसा शब्द है जिसका अंग्रेजी में मतलब होता है आजादी। यह स्वतंत्रता का शब्द है, मुक्ति का नहीं। इस प्रकार मृतक पाप से मुक्त हो जाते हैं। यहाँ इस अध्याय में स्वतंत्रता दो या तीन स्थानों पर लिखी गई है। वे शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण शब्द हैं। रोमियों अध्याय 10 के छठे अध्याय का दसवाँ पद प्रभु यीशु के बारे में बात करता है। **क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है।** तब यीशु मरा, और गाड़ा गया, फिर जी उठा। पिता का काम अभी बाकी है। एक सेवकाई जो कई पुत्रों को महिमा की ओर ले जाती

है। रोमियों अध्याय 6, पद 11 **ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।**

गिनें यह एक शब्द है जैसा आप जानते हैं वैसा ही गिनें या नहीं। यह तब होता है जब हम इस ज्ञान में आते हैं कि हमें स्वयं को प्रस्तुत करना चाहिए। गणना एक सैन्य शब्द है। तो युद्ध में कौन जाने वाला है? फिर एक स्तम्भ आयेगा और जायेगा, फिर उनकी गिनती की जायेगी। एक, दो, तीन गिनें और उन सैनिकों को गिनें ऐसा क्यों है? वे घर नहीं जाते, वे अपनी पत्नियों के पास नहीं जाते, वे अपने बच्चों के पास नहीं जाते, वे युद्ध के मैदान में जाते हैं। इसलिए जब गिनती की बात आती है, तो यह एक ऐसा जीवन है जिसे हमने समर्पित किया है आप अब हमारे लिए नहीं जीते आप अपने आप से कहते हैं कि अब आप अपने लिए नहीं जीते। आपका जुनून, इच्छा और इच्छा नहीं है। आप पाप के लिए मरते हैं और फिर जीवित रहते हैं परमेश्वर मसीह यीशु में रहता है। यह एक महान समर्पण है। छठा अध्याय महान समर्पण का अध्याय है। ज्ञान के क्षेत्र में लाना। इसके आधार पर समर्पण। पद बारह से चौदह उस अधीनता के क्षेत्र हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हम शरीर के अंग हैं। हमारा शरीर पाप के अधीन है और पाप के नियम हमारे शरीर में लिखे हुए हैं। इसलिए पाप हमारे शरीर के अंगों में बिना किसी प्रयास से आ जाता है। कोई प्रयास नहीं है और यह आ रहा है। क्योंकि पाप की व्यवस्था हमारे शरीर के अंगों में है। तब प्रेरित हमें यहाँ बताता है कि क्या हमें इससे उबरना है रोमियों अध्याय 6, पद 12 **इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उस की लालसाओं के आधीन रहो।** जब हम शासन कहते हैं, पाप हमारे चरणों में आता है और कहता है, "ओह, हम फिर से पाप करें।" पाप चाहे हमारी आँखों से कहे या हमारे कानों से, बोलो जैसे आपको जीभ बताने की जरूरत है हमें कोई कठिनाई नहीं है ऐसे ही आ रहा है। इस तरह भाषण में पीएचडी लिया जाता है। किसी पीएचडी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जब तक पाप का नियम है, यह हमारे शरीर के अंगों पर हावी होता रहेगा। पाप हमें गुलाम बना लेगा। काश, जैसा कि प्रेरित पौलुस कहते हैं, मैं एक दुखी व्यक्ति हूँ। रोमियों अध्याय 6, पद 13 **और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुआ में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।** हमें निर्णय लेना चाहिए हमें परमेश्वर के सामने बोलना चाहिए। परमेश्वर मुझे इसके लिए अनुग्रह प्रदान करें, मुझे ऐसा करने के लिए आत्मा की शक्ति चाहिए। भूतों के ऊपर का अधिकार बात में है। हमें यह पूछने की भी जरूरत नहीं है। हमारे अंग। जब हमारा शरीर सीधा होगा तो

परमेश्वर की कृपा भीतर से बहने लगेगी। यह कुछ ऐसा है जो प्रभु ने मुझे वर्षों पहले सिखाया था। इस घड़े को सीधा रहने दो और मुझे घड़े का उपयोग करने दो। इसलिए हमें परमेश्वर के सामने होना चाहिए। सेवा के क्षेत्र वाले पहले से ही घंटों बैठे हैं। परमेश्वर हमारी मदद करें क्योंकि हम एक महान युद्ध के मैदान में हैं। यह एक युद्ध है। और परमेश्वर न करे यह सिर्फ एक मजाक है। यह एक वास्तविक युद्ध है। तब प्रभु को बहुत से ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो इसे समझ सकें। पवित्रता और अलगाव में एक सफल जीवन जीने के लिए आपको एक टीम की आवश्यकता है।

बहाने बनाने वालों को छोड़कर उन्हें शामिल नहीं किया जाएगा। मुझे नहीं पता कि वे कहाँ हैं। यह हर चीज का बहाना है। इसके लिए कोई बहाना नहीं है। शब्द क्या लिखा है आज्ञा मानने के लिए तैयार एक समूह। आगे आना चाहिए। हे परमेश्वर, मुझे इसमें गिनें, और तुम जो मृत्यु के बाद जीवित रहते हो, मृत्यु आ जाती है। यीशु मसीह, जो शरीर के अनुसार दाऊद के शरीर के रूप में पैदा हुआ और मर गया, पवित्रता की आत्मा के संबंध में परमेश्वर का पुत्र बनने का दृढ़ संकल्प था। जैसे आप इस तरह जीते हैं, आपको अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार के रूप में परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए। यह एक प्रार्थना है। आइए प्रतिदिन प्रार्थना करें। फिर यह हमें शरीर के अंगों के लिए प्रार्थना करने की याद दिलाता है। हम शरीर को पोषण देते हैं कुछ लोग सुबह व्यायाम करते हैं। यह अच्छा समय है। एक मील चलने और दो मील चलने पर शरीर के अंगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हे प्रभु, मेरे शरीर के सभी अंगों को धार्मिकता के अधीन करने में मेरी सहायता करो। पहले से ही पाप का एक क्षेत्र हो सकता है और मैं अपने सेवक को विनम्र करता हूँ ताकि मैं उसके अधीन न हो जाऊँ। इस प्रार्थना में बड़ी शक्ति है। जब हम इन बातों को समझते हैं और इस ज्ञान के आधार पर प्रार्थना करते हैं, तो उस प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है। हम अपने जीवन में इस वचन के आधार पर जहाँ कहीं भी प्रकाश में प्रार्थना करते हैं, वहाँ उस प्रकाश के कार्य प्रकट होंगे। इतना ही नहीं, यह बात हमें हमेशा याद रहती है। तब हम छठा अध्याय नहीं भूलेंगे। अगर हम इसे सुबह में एक बार चलते हुए कहते हैं, अगर हम इसके बारे में सोचते हैं और प्रार्थना करते हैं, तो यह पहले से ही हमारे भीतर है। मैंने यह नहीं कहा कि आप सभी पदों को बिना देखे ही पढ़ लें। इसका आध्यात्मिक संदेश हम सभी के भीतर होना चाहिए। इसे फिर से ध्यान करना चाहिए। इसके लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। इस प्रकार वचन हमारे जीवन में व्यावहारिक हो जाता है। रोमियों अध्याय 6, पद 14 **और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के**

आधीन हो॥ फिर विश्वास से दोषमुक्त पिछले पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की कृपा है। लेकिन यहां इस कृपा का क्षेत्र महान समृद्धि का क्षेत्र है। अनुग्रह के अधीन जीवन। परमेश्वर की कृपा हमारे पिछले पापों को क्षमा कर देती है, अर्थात्, हम उस अनुग्रह से भर जाते हैं जब यह एक दिव्य क्षेत्र में कार्य करता है और अनुग्रह के अधीन हो जाता है। दोनों में यही अंतर है। दूसरा यह है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह के वश में नहीं हैं। जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और विश्वास का बपतिस्मा प्राप्त करते हैं, तो ईश्वर की कृपा हमारे सभी पिछले पापों को क्षमा कर देती है। साथ ही, यह हमें सही ठहराता है। यह अनुग्रह है जो परमेश्वर में रहता है। लेकिन यहाँ हम उस अनुग्रह से भर जाते हैं जब हम अनुग्रह के अधीन कहते हैं, जब हम स्वामित्व कहते हैं। अनुग्रह और धार्मिकता की प्रचुरता। वह अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ है, और यह परमेश्वर का अनुग्रह है जो हम पर कार्य करता है। मेरी बात कितने लोगों ने समझी? जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और विश्वास का बपतिस्मा प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर अपने अनुग्रह के आधार पर पिछले पापों को क्षमा करता है। तब इसे दुर्व्यवहार न्याय कहा जाएगा लेकिन यह बाइबिल में एक शब्द नहीं है। तब परमेश्वर की कृपा, जब हम विश्वास से धर्मी ठहरते हैं, हमारे पापों को दूर कर देते हैं। हमें उस ईश्वर की कृपा प्राप्त करनी चाहिए। जब हम लहू से मुक्त होते हैं तो हृदय पर लहू छिड़का जाता है, यह अगला कदम है, कितने लोग समझते हैं? इस्राएलियों ने खाट और झाड़ी पर लहू बहाया, और उन पर लहू न निकला। परन्तु जब वे कहते हैं कि वे वचन को मानेंगे, तो उस मन्त्र के नाम पर उन में से प्रत्येक पर लहू बहा देते हैं। यह उस रक्त को उनकी व्यक्तिगत शुद्धि के लिए शरीर पर छिड़कता है। वह नया नियम है, या लहू का नियम है। जब क्रूस का लहू उस व्यवस्था को एक-एक करके उठाकर हमें क्षमा देता है हम परमेश्वर के सामने इन निर्णयों पर आते हैं। जब मैं कहता हूँ, 'मैं वचन के अनुसार जीना चाहता हूँ, डैडी।' वह शक्तिशाली स्तर है। कितने लोग इसे समझते हैं? यह हमारे जीवन में व्यक्तिगत रूप से होता है। दूसरा वह लहू है जो पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए पिता को चढ़ाया जाता है। वही प्रायश्चित्त कहलाता है। परन्तु हम पतरस की पत्री में देखते हैं कि उन्हें लहू छिड़कने के लिए चुना गया है। तब हमें उस लहू पर भरोसा करना चाहिए और अपने आप को उस पवित्र के अधीन करना चाहिए, कि मैं इस वचन का पालन कर सकूँ। यही बलिदान का नियम है। तो क्या किसी ने परमेश्वर के वचन के साथ बलिदान की व्यवस्था की है? जब मूसा ने कहा, कि इस्राएलियोंको वचन मानना चाहिए, तब मूसा ने एक एक पर लहू छिड़का, और कहा, कि यह व्यवस्था है। जब हम परम पावन को लेते हैं तो हमें यही समझना चाहिए। मैं इसे

वर्षों से नहीं जानता था लेकिन तब मुझे इसका एहसास हुआ। प्रभु ने कहा कि नया नियम मेरे खून में है जब मैं उस पवित्र भोज को देता हूँ। हमें वह नया कानून बनना चाहिए। जब हम उस नए कानून को कहते हैं, तो ये शब्द हमारे दिलों में लिखे जाने चाहिए। ऐसा क्या? दिलों में लिख देना चाहिए। यदि इसे लिखा जाना है, तो इसकी परमेश्वर के साथ वाचा होनी चाहिए। पवित्र, मैं इस वचन के अनुसार जीता हूँ। यानी हम यह फैसला बपतिस्मे के बाद कई बार कर सकते हैं। जब यह नीचे आता है, तो इसकी रिलीज बहुस्तरीय होती है। जब वह विज्ञप्ति आती है तो हम पुनः प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमें नहीं पता था कि उस समय हमें खून का स्पर्श मिल रहा था। यह उत्कृष्टता का उपहार है। वैसे ही पवित्रस्थान का प्रवेश उस लहू के द्वारा होता है जो हम में प्रवेश करता है। अनुग्रह का वह कार्य हममें अनुग्रह से परिपूर्ण होने की अवस्था है। विश्वास के द्वारा दोषमुक्त के साथ भी ऐसा ही है। justification अंग्रेजी में यही शब्द है righteousness बिल्कुल भी नहीं justification [दोषमुक्त] हमें उस शब्द में क्या समझने की जरूरत है परमेश्वर की उस धार्मिकता में, परमेश्वर हमें दंड दिए बिना हमें पिछले पापों से छुड़ाएगा। फिर, यदि हम उस क्षेत्र में दृढ़ता से स्थापित हैं, तो परमेश्वर की धार्मिकता हम में बहुत अधिक होगी। यह संदेहपूर्ण है कि उस समय परमेश्वर की धार्मिकता हमारे भीतर आई। मैं उस पर विवाद नहीं करता लेकिन जब वह आता है, तो वह अनुग्रह की बहुतायत में नहीं होता है, हमें उसे प्राप्त करना चाहिए और उसे लेना चाहिए। यानी न्याय की प्यास। तब केवल जब कोई ऐसे क्षेत्र में आता है जहां उसे गंभीरता से जीने की आवश्यकता होती है, तो उसे एहसास होता है कि उसे अनुग्रह की पूर्णता की आवश्यकता है। इसी से हम धार्मिकता की प्रचुरता और पवित्र आत्मा की प्रचुरता को सीखते हैं। तभी हम एक सफल जीवन जी सकते हैं। उस समय हम भीख मांग रहे हैं या इसके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। इसके लिए खुद को फिर से जमा करना। यह एक वास्तविकता है जब हम इसे एक बड़ी जरूरत के सामने करते हैं। हमें कुछ भी नहीं मिलता जब हम ऐसा जीवन जीते हैं जहां कोई उद्देश्य नहीं होता, इसे साकार किए बिना, हम जहां भी जाते हैं, जहां लड़ाई होती है, गाते-गाते हैं और कहते हैं कि हम बच गए हैं और बपतिस्मा ले लिया है। हम उसके लिए नहीं बैठे हैं, हमें इसकी जरूरत महसूस नहीं होती। जब हमें इसकी आवश्यकता का एहसास होता है, तभी हम इस विचार से शासित होते हैं कि हम इसे केवल प्राप्त कर सकते हैं यह तब होता है जब हमें अपने दैनिक जीवन में इसकी आवश्यकता होती है कि हम हर कदम के बारे में सोचते हैं और इसके लिए हमें क्या करना चाहिए। जिन लोगों को इसके लिए देखने

की जरूरत है उन्हें देखना। जो चीजें करने की जरूरत है उन्हें करना। जैसा कि कहा जाता है, चूंकि यह आध्यात्मिक जीवन में एक अदृश्य क्षेत्र है, जब हम एक जीवन को दूसरी तरफ एक दृश्य क्षेत्र में जीते हैं, तो हमें दूसरे जीवन के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है। फिर जब वह जागरूकता आती है, तो हमें पता चलता है कि वह मंत्रालय आस-पास के क्षेत्रों में है। यदि हम पवित्रता के क्षेत्र में हैं, तो हम यह सेवकाई कर सकते हैं। तब हम पवित्रता के लिए रोना शुरू कर देंगे। तब हम इसके लिए तरसते हैं जब यह आध्यात्मिक समझ की बात आती है कि जीने का क्या मतलब है और हमें सौंपा गया कार्य करना है। हम जो जमा कर रहे हैं। खुद गिन रहे हैं। तब यहोवा परमेश्वर हमें उस क्षेत्र में ले आए। जब हम ऐसा करते हैं तो हम अनुग्रह के अधीन हो जाते हैं। एक बार जब हम अनुग्रह के अधीन हो जाते हैं तो हमारे जीवन में पाप का कोई प्रभुत्व नहीं होता है। हमें इसके लिए जमा करना होगा। रोमियों 6: 15 लेकिन क्या? फिर से सवाल है। **तो क्या हुआ क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं।** पंद्रहवें अध्याय में प्रेरित ने एक पद का उच्चारण किया जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह बहुत हुआ ऐसा कहकर, एक समस्या है। किसी ने मुझसे एक सवाल पूछा क्या अनुग्रह के अधीन होने का अर्थ यह है कि पाप करने में कोई हानि नहीं है? मुझे नहीं पता रोमियों 6: 15 **तो क्या हुआ क्या हम इसलिये पाप करें, कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं।** पाप को हम पर हावी होने की अनुमति नहीं है और पाप हम पर विजय प्राप्त कर सकता है। इससे मुक्त होना ही हमारा आह्वान है। रोमियों की पत्री के छठे अध्याय का छठा पद बहुत महत्वपूर्ण है। **क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है** पता नहीं फिर से क्या सवाल है? हमसे यही पूछा जाता है। मुझे यह नहीं मालूम था। इसलिए मैंने इसे जमा नहीं किया। लेकिन आप यहां जो कह रहे हैं वह यह है कि आप अपने आप को दास बनने के लिए समर्पित करते हैं। क्या हम दास के रूप में परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए समर्पित हैं? यही एक सवाल है जो मुझसे पूछा गया था। क्या मैंने इसे पढ़ते समय यह राशि जमा कर दी थी? कुछ अनुवादों में, शब्द गुलाम है। एक दास के रूप में, क्या मैंने स्वयं को परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध किया है? यदि आप में से किसी ने भी सबमिट नहीं किया है, तो अब समय आ गया है। अभी जमा करें। हे यहोवा, मैं तेरे वचन का पालन करने वाला दास हूं। जो तेरी आज्ञा का पालन करता है, वह

दास है। हम उनके गुलाम हैं जिनकी हम आज्ञा मानते हैं। यदि हम पाप का पालन करते हैं, तो हम पाप के दास हैं। यदि हम धार्मिकता का पालन करते हैं, तो हम धार्मिकता के दास हैं। फिर दो महत्वपूर्ण बातें हैं। एक तो यह कि हम गुलाम हैं जिनकी हम आज्ञा मानते हैं। यदि पाप का है, तो वे पाप के दास हैं। परन्तु पहली बात यह है कि यदि हम धार्मिकता के दास बनना चाहते हैं या परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहते हैं, तो दास, मैंने खुद को एक गुलाम के रूप में प्रस्तुत किया है। जब वह कहता है कि वह दास है, तो उसका स्वामी जो कहता है, वह मानता है। कोई सवाल नहीं है। क्या स्वामी उस दास से कहेगा, जो मैदान में गया और दिन भर परिश्रम करता रहा, और नीचे आ, और मैं तुझे पानी पिलाऊं ? नहीं, यहाँ आने पर अपने मालिक के पैर कौन धोता है? नौकर धो रहा है जैसा कि लूका सत्रहवें अध्याय के दसवें पद में कहता है इसके बावजूद **इसी रीति से तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहा, हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है॥** कोई इनाम नहीं है। कोई अपराधबोध नहीं, कोई बड़बड़ाहट नहीं, वही बीते कल का असली गुलाम है। तो एक नौकर का कोई सवाल नहीं है जब मैं इस पद को पढ़ूँगा तो मैं इसका पालन करूँगा। मुझे इसका पालन करना है। आत्मा मेरी मदद करेगी मैं सत्य की भावना में अपना स्वामी बनूँगा। वह मैं हूँ। वह मैं हूँ। तो कितने गुलाम बन गए? जब हम अपने बारे में चित्र बनाने की बात करते हैं तो हममें से अधिकांश का रवैया शांत होता है। प्रभु, जब यह संभव हो, मुझे इसकी आवश्यकता है। हम वचन पढ़ते हैं। ऐसा नहीं है कि मुझे यह पसंद नहीं है। हर जगह जाकर इसे पढ़ें। नया विचार एक ऐसा विचार है जो अभी उपलब्ध नहीं है विचार जो परमेश्वर ने मुझे दिया था जब मैं कल बैठा था क्या मूर्खता है कि किसी ने कभी इसके बारे में नहीं सुना। इनमें से कोई भी इस शब्द का पालन नहीं करना है। फिर जो जमा करता है रोमियों अध्याय छह, पद सोलह **क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है** तब हमें धार्मिकता के लिए आज्ञाकारिता के सेवक होने के लिए समर्पित होना चाहिए। यह वह आवाज है जो भीतर से आती है। क्योंकि हमें याद रखना चाहिए कि यह एक धन्य जीवन है। धार्मिकता में जीना एक धन्य जीवन है। अन्याय आने पर हमें कितना भी लाभ हो, हमें उसके विरुद्ध अनुभव भी होते हैं। यह एक शांतिपूर्ण जीवन है। यह यहां और अनंत काल के लिए उपयोगी होगा। रोमियों अध्याय 6 के श्लोक 16 और 18 बहुत महत्वपूर्ण हैं। **परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप**

के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। फिर सलाह का रूप आपको सिखाया। तब चर्च में सिद्धांत बन गया। यह केवल आपसे और यहां से एक शब्द लेने और लोगों को केवल कांपने और उन्हें खुश करने के लिए सिखाने की बात नहीं है। यह निर्देश का रूप है। स्वयं मसीह के रूप में मसीह के प्रकाशन को एक निर्देश के रूप में प्राप्त किया जाना चाहिए जो यह बताता है कि मसीह कौन है जो उस रूप में उतना ही अच्छा है। सिद्धांत एक महान अनुग्रह है। सलाह एक शक्तिशाली प्राधिकरण है। जब हमें वह सलाह मिलती है, तो हमें पूरे दिल से उसका पालन करना चाहिए। तभी हम वचन को वैसे ही प्राप्त कर सकते हैं जैसे वह हृदय में है। आज्ञाकारिता को निहित शब्द के रूप में प्राप्त किया जाना चाहिए, और आज्ञाकारिता आनी चाहिए। रोमियों 6: 18 **और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।** हमें सिद्धांत का अध्ययन करना चाहिए, इसे परमेश्वर की आत्मा में प्राप्त करना चाहिए, इसे सिद्धांत के रूप में प्राप्त करना चाहिए, और पूरे मन से इसका पालन करना चाहिए, ताकि हम पाप से मुक्त हो सकें। यही उच्च मानक है। पाप से मुक्ति होती है। यह अतीत में किया गया पाप है पाप के लिए मरो। हमारे भीतर पाप के क्षेत्रों, पृथ्वी पर अपने अंगों को मार डालो। रोमियों का आठवां अध्याय कहता है कि वह परमेश्वर के वचन और आत्मा के द्वारा तुम्हारे शरीर के कामों को मार डाले। ये बातें तब घटित होंगी जब हम परमेश्वर के उस आत्मा की आज्ञाकारिता में चलेंगे जिसके लिए हमें कार्य करना है। मुझे नहीं पता कि अगले हफ्ते क्या करना है मुझे नहीं पता कि इसके साथ क्या करना है। हम ऐसे निर्णय लेने वालों को जानते हैं और यह बिल्कुल भी व्यावहारिक नहीं है लेकिन यह तब होता है जब आप आत्मा की आज्ञाकारिता में चलना शुरू करते हैं। परमेश्वर की आत्मा इसे जानती है। तब हमारा कार्य इस पवित्र आत्मा की आज्ञाकारिता में आना है। आपको इसे हर दिन अपनी प्रार्थनाओं के अधीन करना चाहिए। पापा मुझे उस जिंदगी में आना है। यही हमें आजादी के इस दायरे में लाता है। आत्मा स्वयं हमें परमेश्वर का वचन देता है जिसे हमें सिद्धांत के रूप में प्राप्त करना चाहिए। उसका पालन करना हमारा दायित्व है। आत्मा हमारे सहायक के रूप में हमारे साथ है। आत्मा हमें आज्ञा मानने में मदद करेगा, क्योंकि जब जीवन है तो जीवन है। रोमियों 6: 18 **और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए।** यह एक बड़ा बदलाव है। वे पाप के दास और अन्याय के दास थे लेकिन जब हम परमेश्वर के वचन और उस क्षेत्र से परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दिल से आज्ञाकारिता का जीवन जीते हैं हमारे शरीर के सभी अंग धार्मिकता की गुलामी के गुलाम होते जा रहे हैं। रोमियों के अध्याय छह के छठे अध्याय के उन्नीसवें पद के निचले भाग को पढ़ते समय **अब**

अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो। मैं एक सबमिशन पर आना चाहता हूं। मैं पाप से मुक्त होने के लिए पाप के लिए मरने के लिए खुद को प्रस्तुत करता हूं। मैं इसके लिए खुद को विनम्र करता हूं। तो जब आप इसे समर्पण के साथ पढ़ते हैं, जब हम हृदय में आते हैं, तो आने वाले दिनों में पवित्र आत्मा स्वयं हमें यह सलाह देता है। परमेश्वर आपके जीवन के बारे में कुछ चाहता है। इसलिए तुम इस समय परमेश्वर का वचन सुन रहे हो, परमेश्वर ने तुम्हें यह वचन दिया है पवित्रता के दासों के रूप में तुम्हें धार्मिकता के अधीन होना चाहिए। रोमियों अध्याय 6 पद 22 **क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।** यह तीसरी बार है जब हमने अनन्त जीवन को पढ़ा है। लेकिन अब पाप से मुक्ति वहाँ छुटकारे के रूप में नहीं लिखी गई है। यह नहीं लिखा है कि पिछले पापों की क्षमा इसका अर्थ है पाप से मुक्ति। इस पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के दास बनो अर्थात् परमेश्वर का दास बनो। यहाँ इस अध्याय में परमेश्वर के सेवक को पाप से मुक्त होने के लिए कहा गया है। Freedom from sin यही सच्ची आजादी है। यूहन्ना के सुसमाचार के आठवें अध्याय के पद 31, 32 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। रोमियों के आठवें अध्याय के दूसरे पद में **क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।** जीवन की आत्मा का दस्तावेज भीतर लिखा हुआ शब्द है। आत्मा में लिखा हुआ वचन भीतर है। हृदय वचन से भर जाता है। जीवन का वचन ही है और शब्द ही वचन है। हमारे भीतर का आदमी शब्द से मजबूत होता है। सत्य की आत्मा हमारे भीतर वास करती है। स्वतंत्रता वह है जो आत्मा के अधीन रहता है सच्ची स्वतंत्रता। यह बाध्य नहीं है हमें इसे प्राप्त करना है। यह स्वचालित नहीं है। हमें इसे प्राप्त करना है। रोमियों अध्याय 6 पद 22 **क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।** वहाँ पवित्रीकरण शुद्धि का अर्थ पवित्रता नहीं है। सफाई करना या धोना। पवित्र होने के लिए बर्तन को पहले पवित्र होना चाहिए। भीतर और बाहर की पवित्रता अनन्त जीवन का अंत है। बुरे मानसिक छापों के जलने का यही सही अर्थ है वह है स्वर्ग का नक्शा। यह तो बाप के पास जाने का नक्शा है। हम पाप से मुक्ति जानते हैं। हमने जिस चीज से शुरुआत की वह विश्वास के द्वारा दोष मुक्ति थी। जब हम धर्मी ठहराने से अपनी

यात्रा शुरू करते हैं और अनुग्रह के मार्ग में प्रवेश करते हैं, तब परमेश्वर का आत्मा हमें जीवन की प्रक्रिया में ले जाता है। यह हमें परमेश्वर की महिमा की आशा देता है। रोमियों अध्याय 5, छंद तीन और चार **केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। ओर धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।** क्या आपने उम्मीद खो दी है? नहीं, परमेश्वर की महिमा के लिए अभी भी आशा है। क्योंकि परमेश्वर का प्रेम उसके पवित्र आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में दिया जाता है। जब तक वह प्रेम है, जो कुछ भी होता है, प्रभु यीशु मसीह के उस प्रेम से, कोई भी शक्ति मुझे प्रभु के साथ उस संबंध से अलग नहीं कर सकती। क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमारे भीतर है। परन्तु विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने के बाद यीशु मसीह के द्वारा जीते गए जीवन में हम क्रोध से कितना अधिक बचेंगे? यदि हम यीशु मसीह के द्वारा नहीं जीते हैं, तो हम पाप करते रहेंगे। हम जानते हैं कि विश्वास से धार्मिकता लहू है, लेकिन यदि हम जीवन को जीते बिना पाप करना जारी रखते हैं तो हमें यीशु मसीह के द्वारा जीना चाहिए, यह खतरनाक है। जब हम पहली बार आत्मा के द्वारा जीते हैं तो हम पूर्णता में नहीं आते हैं। कभी-कभी केवल पांच प्रतिशत ही देखा जाता है। परन्तु उस समय हम ने पाप किया होगा, परमेश्वर हमें वहां नहीं ले जाएगा। आत्मा हमें जगाएगी। बेबी, तुम जो कर रहे हो वह पाप है। लेकिन जब परमेश्वर के जागरण का स्तर चला गया है, जब हमारा मन भर जाता है, तो हम पाप करते रहते हैं वह जानबूझकर पाप करता रहता है। जब हम जानना कहते हैं तो हमें आत्मा को जगाने का अनुभव नहीं होता। वह चला गया जब आत्मा प्रारंभिक दिनों में पाप को जगाती है, तो हम उसका पालन नहीं करते हैं और जब हम आगे बढ़ते हैं तो पाप का जीवन जीते हैं। तभी हम उस अपराध बोध को खो देते हैं। फिर अगर हम उस पाप को लगातार जीते हैं, तो वह जीवन खतरे में है। तब परमेश्वर का आत्मा हमारी सहायता करेगा जब हम धीरे-धीरे अपने दैनिक जीवन में आत्मा की आज्ञाकारिता में वृद्धि करेंगे। हमें परमेश्वर की बहुत बड़ी कृपा प्राप्त होती है। क्या कारण है? हमारे अंदर रोना है। मैं आत्मा में जीवन जीना चाहता हूँ, मैं सच जीना चाहता हूँ। मुझे पाप से मुक्ति चाहिए, मैं वास्तव में परमेश्वर का सेवक बनना चाहता हूँ। तब यह सब हमारे भीतर लिखा होना चाहिए और जब हम उस एक विचार में जीना शुरू करते हैं, तभी हम जीवन के उस क्षेत्र में आध्यात्मिक विकास देख पाते हैं। पाप के बंधन हमसे छूटते नजर आते हैं। हम पाते हैं कि दुनिया में हमारी दिलचस्पी कम हो रही है। क्योंकि परमेश्वर हमें अनुग्रह दे रहे हैं। लेकिन इन दिनों बिना किसी लक्ष्य के, बिना किसी लक्ष्य के दुनिया के अनुरूप जीवन जीना

बहुत खतरनाक है। रोमियों अध्याय छह, पद तेईस **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥** यह परमेश्वर के एक बच्चे के जीवन में सच है। यदि परमेश्वर का बच्चा बपतिस्मा लेता है और चर्च और मण्डली में आता है लेकिन फिर से पाप में रहता है, तो पाप की मजदूरी मृत्यु है। याद रखें, छठवां अध्याय, यह परमेश्वर के बच्चों के लिए लिखा गया था। **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥** अनुग्रह का वह उपहार क्या है? हमें पाप से मुक्त होना चाहिए और परमेश्वर के दास बनना चाहिए। उन्हें जो परिणाम मिलता है वह पवित्रता है। इसका अंत अनन्त जीवन है। तीन या चार पदों में हमने अनन्त जीवन के बारे में सोचा। रोमियों 2: 7 **जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा।** तब हमें परमेश्वर की महिमा की आशा में घमण्ड करना चाहिए। उसके लिए हमें अपना जीवन व्यतीत करना होगा या हम किसी जानलेवा बीमारी का सामना कर रहे हैं। फिर जो हमारे पास है उसके लिए हम दिन-रात दौड़ते हैं। वही हमेशा हम पर राज करता है। जब आप इसे देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि यह वहां जाता है, जब आप इसे देखते हैं, ऐसा लगता है कि यहां सब कुछ इच्छा के पीछे चला जाता है। वासना, आँखों की वासना, जीवन की महिमा। जब सांसारिक प्रेम और सब कुछ अंदर चला जाता है तो शरीर के अंगों को कुछ भी नियंत्रित नहीं कर सकता है जो मुँह से निकलता है वह रोता है, सुनता है कि क्या ज़रूरत नहीं है, अनावश्यक लगता है, ऐसे लोग सांसारिक होते हैं। वे सांसारिक प्रेमी हैं अनन्त जीवन उनके लिए नहीं है। अनन्त जीवन वह है जो अमरता और महिमा चाहता है। रोमियों की पांचवें अध्याय में इक्कीसवीं पद **कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे॥** रोमियों की पांचवें अध्याय में सत्रहवाँ पद पढ़ते समय **क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।** मुझे याद दिलाया गया और इसके लिए रोया और इसके लिए प्यासा था। इस जीवन में शासन करने के लिए हमारे प्रार्थना कक्ष में रोना चाहिए। यीशु मसीह के द्वारा धार्मिकता का उज्ज्वल जीवन मिल जाएगा न्याय का जीवन। बस। उसे बहुतायत में अनुग्रह और धार्मिकता प्राप्त करनी चाहिए, उसके लिए भूख होनी चाहिए। दुनिया के सभी कीड़ों को अंदर से बाहर निकालना चाहिए, कूस का वचन अवश्य प्राप्त हुआ होगा। जो कुछ भी अन्याय से खड़ा है उसे

जाना चाहिए। जिस चीज को गिराने की जरूरत है, उसको गिरा देना चाहिए जो कुछ भी गिराने की जरूरत है उसे ध्वस्त कर दिया जाना चाहिए। जो ऐसे हैं वे जीवन का वचन या धार्मिकता का वचन प्राप्त करते हैं, शांति के वचन को प्राप्त करना, अनुग्रह के वचन को प्राप्त करना। बाइबल में हर शब्द कई आयामों में पाया जाता है। जब हम प्रेरितों के काम में पढ़ते हैं तो हम पढ़ते हैं कि अनुग्रह का वचन गवाह बना। यीशु ने जाकर एक वचन सुनाया और अपने अनुग्रह के वचन की गवाही दी। कृपा का वचन प्राप्त होना चाहिए। हमारे भीतर सभी दिव्य तत्वों को प्रकट किया जाना चाहिए, न्याय का आधार है। जब यह कहा जाता है कि परमेश्वर धर्मी है। परमेश्वर का सिंहासन धर्मी है। स्वर्ग का राज्य धर्मी है। मत्ती के सुसमाचार के छठे अध्याय के तैत्तीसवें पद को पढ़ते समय **इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।** रोमियों के चौदहवें अध्याय के सत्रहवें पद को पढ़ते समय **क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है;** तब धार्मिकता का जीवन है, न्याय का आधार है। कोई अन्याय नहीं है हम जो कुछ भी करते हैं वह न्यायपूर्ण है। क्या हमें कार्य करने से पहले सोचना चाहिए? क्या कोई अन्याय है? न्याय में जीवन इतना गंभीर है जब हम उस बिंदु पर पहुंचे जहां हमने अपना दिमाग न्याय पर लगाया, तो मुझे एहसास हुआ कि न्याय का जीवन जीना भी जरूरी है। उसी समय से मैं प्रार्थना करने लगा हे प्रभु, मुझे नेकी का वचन दे कि मैं नेकी का जीवन जीऊं। जो कुछ भी मैं न्याय के साथ करता हूं, उसे करने में आपको मेरी मदद करनी चाहिए। अन्याय न होने दें। यीशु मसीह के द्वारा सदा के लिए धार्मिकता में जीने के लिए मैंने कई बार कहा है और प्रार्थना की है। यानी न्याय हमारे जीवन का आधार है। अध्याय छह पद बाईस और तेईस को पढ़ते समय **क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।** **क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥** अनन्त जीवन एक ऐसा विषय है जो इन दिनों मेरे दिमाग में बहुत आता है। आज्ञाओं का पालन करो और वही करो। सब कुछ वचन का पालन करता है बाइबल हमें कई जगहों पर यह भी बताती है कि यदि हम वचन का पालन नहीं करते हैं, तो हमारी निंदा की जाएगी। मैथ्यू के सुसमाचार के उन्नीसवें अध्याय के उन्नीसवें पद को पढ़ते समय **और देखो, एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा, हे गुरू; मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं? उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है;**

पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। लूका के सुसमाचार के दसवें अध्याय के पच्चीस से अट्ठाईस पद पढ़ते समय और देखो, एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर, उस की परीक्षा करने लगा; कि हे गुरू, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूँ? उस ने उस से कहा; कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है? उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है, यही कर: तो तू जीवित रहेगा। यदि आप अनन्त जीवन की मांग करते हैं, तो आपको परमेश्वर से अपने पूरे दिल से, अपनी सारी आत्मा से, अपनी सारी शक्ति से, और अपने पूरे मन से प्रेम करना चाहिए। उस मार्ग ने मुझे एक बार छुआ, कि तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। उस समय मैं बैठ गया और प्रार्थना की, हे प्रभु, इस प्रेम में आने में मेरी सहायता कर। आपको इस प्यार में आना होगा और इसमें मेरी मदद करनी होगी। युहन्ना का सुसमाचार 15:10 **यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।** ये दो आज्ञाएँ हमारे जीवन में तभी पूरी होंगी जब हम उस निवास में जाएंगे। यह शाही कानून है। प्रेरित ने लिखा कि यह एक शाही फरमान था। यह हमारे जीवन में तभी सच होगा जब हमें उस राजा से प्यार हो जाएगा। युहन्ना का सुसमाचार के तीसरे अध्याय की छत्तीसवीं पद **जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥** फिर जब हम कहते हैं कि हम पुत्र में विश्वास करते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि विश्वास और आज्ञाकारिता प्रकट हुई है। यानी विश्वास आज्ञाकारिता लाता है। क्या पालन करना है? प्रभु की आज्ञा। आगे लिखा है कि उसने पुत्र की अनादर की। वो क्या है? जो वचन का पालन नहीं करता वह जीवन को नहीं देखेगा यूहन्ना दस के छब्बीस से अट्ठाईस पद पढ़ें **परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। मेरी बात सुनो। अगला श्लोक मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।** अनुसरण करना वचन के अनुसार जीना है। अगला वाक्य **और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।** कुछ लोग उस अट्ठाईसवें पद को सिर्फ पढ़ता है। पढ़ने के बात बोलेंगा कुछ भी गलत नहीं है। परमेश्वर को धन्यवाद आपको कोई नहीं चीन ले जाएगा, लेकिन क्या आप उनमें से एक हैं? या यह लिखा है कि वे मेरे झुंड के नहीं

हैं ? उसका क्या कारण है? यह एक ऐसा समूह है जो वचन की अनादर करता है मेरी भेड़ें मेरी आवाज सुनती हैं। मेरी बात सुनो। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। जॉन बारह अध्याय छब्बीसवाँ पद। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूँ वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। फिर जो मेरी सेवा करे, वह मेरे पीछे हो ले। क्या पालन करना है? शब्द। जॉन बारहवें अध्याय का सुसमाचार पचास छंद और मैं जानता हूँ, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ॥ यीशु की आज्ञाएँ अनन्त जीवन हैं। युहन्ना का सुसमाचार, अध्याय चौदह, पद 6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। वचन हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा मार्ग दिखाता है। अर्थात्, स्वर्गीय मार्ग हमें प्रभु की शिक्षाओं, आज्ञाओं और जीवन के तरीके से दिखाया गया है। यही सत्य है। वचन हम में सत्य होना चाहिए। तभी हम उसमें रहने लगते हैं जैसा कि जॉन के सुसमाचार के आठवें अध्याय के बत्तीसवें पद में कहा गया है **और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।** वचन ही जीवन है। फिर यह यीशु के वचन के बारे में है। जब हम वचन, सत्य, और जीवन के माध्यम से यात्रा करते हैं तो हम पिता की इच्छा के लिए बन जाते हैं। हम पाप से मुक्त हो जाते हैं और परमेश्वर के दास बन जाते हैं तब हमें पवित्रता प्राप्त होती है, जिसका अंत अनन्त जीवन है। तब हमें अपनी बुलाहट और अपनी पसंद को जानना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि खुद को कैसे प्रस्तुत करना है। हमें उन परिस्थितियों को जानना होगा जिनमें हम मरते हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि हमें किसमें रहना है। हमें वह सलाह लेने की जरूरत है जिसकी हमें जरूरत है। इसे सलाह के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, हमें इसे पूरे दिल से मानना चाहिए। जब हम पूरे मन से आज्ञा मानते हैं तो हम पाप से मुक्त हो जाते हैं। हमारा ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण होना चाहिए रोमियों 6: 6 **क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।** तब हमें इस ज्ञान में आना चाहिए। इसके लिए आपको सबमिट करना होगा। वचन को विश्वास में विकसित होना चाहिए। विश्वास का विकसित होता हुआ वचन हमारे जीवन में सच होना चाहिए। हमें उस सत्य पर चलना चाहिए और जीना चाहिए यही वह जीवन है जिसमें हमें ये महान वादे मिलते हैं। अब्राहम के जीवन में उसकी निर्जीवता वादा किए

गए वंश का जन्म सारा के गर्भ के निर्जीव क्षेत्र में हुआ था। तो यह उस आत्मा की प्रतिज्ञा है जो हमें इब्राहीम के द्वारा प्राप्त होती है। इब्राहीम की ओर से क्या आशीष है? गलातियों अध्याय 3, इसका चौदहवाँ पद **यह इसलिये हुआ, कि इब्राहिम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है॥** इब्राहीम, जो आशा के विपरीत आशा में विश्वास करता था, ने अपने शरीर की निर्जीवता और सारा के गर्भ की निर्जीवता के लिए इनमें से किसी को भी ध्यान में नहीं रखा। क्योंकि जिसने वादा किया है वह वफादार है। हमें अपने जीवन में यह याद रखना चाहिए कि जो वादा किया गया है वह विश्वासयोग्य है। वह आशीर्वाद क्या है? वह वादा? आत्मा का वादा किया विषय। पत्र में प्रेरित कहते हैं कि बच्चे इस वादे का विषय हैं जैसा कि **पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।** शरीर कैसे मरता है? आत्मा की आज्ञाकारिता में चलने पर शरीर मर जाता है। हमें यह जानने की जरूरत है कि हमारे पुराना मनुष्य, हमारे आदमिक आदमी, शरीर के आदमी को प्रभु यीशु के साथ सूली पर चढ़ाया गया था, ताकि हम पाप से मुक्त हो सकें ताकि हमारे पाप शरीर को हटाया जा सके, या ताकि हम गुलाम न हों गुनाह करने के लिए। अब्राहम के जीवन में ऐसा ही हुआ। लेकिन जब उसका शरीर निर्जीव होता है, जब संसार की सारी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं, जब कोई संभावना नहीं होती है, तो आत्मा का वादा किया हुआ विषय यह होता है कि उसके जीवन में आत्मा की क्रिया अवश्य होनी चाहिए। उसे उस शर्त में वह वादा प्राप्त करना होगा। जैसे, अगर हम जीते और मरते हैं, तो हमारे शरीर के अंग, हमारे पूरे अस्तित्व के सभी क्षेत्र, आत्मा की आज्ञाकारिता में रहना शुरू कर देंगे। पुराना मनुष्य बाधा है। वह इसकी अनुमति नहीं देगा। उसके पास राग की इच्छाएं हैं। उसे सूली पर चढ़ाया जाना चाहिए, वह बेजान होना चाहिए। उसमें संसार निर्जीव होना चाहिए, उसमें वह पुराना स्वाभाव निर्जीव होना चाहिए। यहीं पर हम आत्मा की आज्ञाकारिता का जीवन जीने के लिए आते हैं। उस आत्मा का वादा किया हुआ विषय हमारे जीवन में वास्तविकता बन जाता है। वह जीवन ही वह जीवन है जो पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित है। पाप से मुक्त जीवन, परमेश्वर की दासता का जीवन, पवित्रता से पवित्रता की ओर बढ़ने वाला जीवन। उस जीवन के द्वारा, उस मार्ग से, सत्य और जीवन के साथ, हम अनन्त जीवन में प्रवेश करते हैं। आइए हम इसके लिए खुद को विनम्र करें और इसके लिए समर्पण करें। प्रभु परमेश्वर आप सभी को इन वचनों से आशीष दें।

आमेन

For Technical Assistance
Amen TV Network
Trivandrum,Kerala
MOB : 999 59 75 980
755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork

Contact
Pastor.Benny
Thodupuzha
MOB: 9447 82 83 83